



साहित्य पर सोशल मीडिया के प्रभाव : निहितार्थ और भविष्य की दिशाएँ

डॉ. दिनेशचन्द्र माली

प्राचार्य, श्रीमती धारीणीबेन ए. शुक्ला बी. एड. कॉलेज, महेमदाबाद, जिला-खेड़ा (गुजरात)

सारांश

वर्तमान में सोशल मीडिया दुनिया भर के लोगों के जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया है। माइस्पेस, फ़ेसबुक, टैग्ड जैसी कई अन्य सोशल नेटवर्किंग साइटों के आगमन ने लेखकों और विद्वानों द्वारा इलेक्ट्रॉनिक सोशल मीडिया और सहकर्म समीक्षाओं की व्याख्या, संबंध, विश्लेषण, आलोचना, प्रशंसा और निर्माण के तरीकों में रुचि को फिर से जगाया है। अब तक, सोशल मीडिया अध्ययनों में इंटरनेट के उपयोग को एक यंत्रवत, प्रकार्यवादी, भौतिकवादी और प्रायः संज्ञानात्मक दृष्टिकोण से देखा जाता रहा है। विद्वान अब तक समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, साहित्य आदि मानविकी विषयों के प्रति उदासीन रहे हैं, जबकि उपकरण के रूप में, सोशल मीडिया और नेटवर्किंग साइटों का लेखकों, आलोचकों और विद्वानों द्वारा शैक्षणिक, आलोचनात्मक और रचनात्मक उद्देश्यों के लिए व्यापक रूप से उपयोग किया जा रहा है। यह लेख शोधपत्र सामाजिक संकेतविज्ञान और बहुविधता दृष्टिकोणों का उपयोग करके यह दर्शाता है कि कैसे विभिन्न साहित्यिक आलोचक और लेखक डिजिटल ग्राफ़िक आख्यानों और छवि-पाठ संकुल से प्राप्त सैद्धांतिक मॉडलों का उपयोग करते हुए छवि-पाठ संकुल की व्याख्या और निर्माण में संघर्ष करते हैं। लेखकीय और आलोचनात्मक विश्लेषण और मूल्यांकन एक सदी आगे बढ़ गए हैं और व्यापक स्तर पर प्रभाव और बदलाव ला रहे हैं, लेखक, कवि, फिल्म निर्माता और आलोचक भी साहित्यिक आलोचकों और विद्वानों द्वारा सोशल नेटवर्किंग साइट्स और सोशल मीडिया अनुप्रयोगों के उपयोग का अनुकरण कर सकते हैं। इसके अलावा, निष्क्रिय और एकाकी से सक्रिय और संवेदनशील चिंतनशील अभ्यास करने वाले शिक्षाविदों को सोशल नेटवर्किंग साइट्स का उपयोग करने की प्रेरणा मिलनी चाहिए, ठीक उसी तरह जैसे इलेक्ट्रॉनिक पत्रकारिता और मीडिया साक्षरता से जुड़े शोध समुदाय फ़ेसबुक, academia.edu, और मल्टीमीडिया और फिल्मों का उपयोग करते हैं।

मुख्य शब्द - सोशल मीडिया, प्रकार्यवादी, भौतिकवादी, सामाजिक संकेतविज्ञान डिजिटल ग्राफ़िक आख्यान, इलेक्ट्रॉनिक पत्रकारिता ।

प्रस्तावना: सोशल मीडिया आधुनिक समाजों का एक अभिन्न अंग बन गया है, और वर्तमान में यह दुनिया भर के लोगों के जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया है। तदनुसार, सोशल मीडिया का उपयोग एक सर्वव्यापी माध्यम बन गया है जो व्यक्तियों को नवीनतम रुझानों तक पहुँचने के साथ-साथ अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने का अवसर प्रदान करता है। साहित्य, व्यक्तिगत संवाद को सुगम बनाने वाला एक मंच होने के नाते, लेखकों और उनके पात्रों द्वारा जीए और चित्रित अनुभवों के आदान-प्रदान के माध्यम से सोशल मीडिया की परिघटना के अस्तित्व की गारंटी देता है। यह कृति साहित्य में सोशल मीडिया के उद्भव और साहित्यिक रचनाओं पर इसके संभावित प्रभावों की पड़ताल करती है, जिसमें शिक्षाविदों और पेशेवरों के दृष्टिकोणों को ध्यान में रखा गया है। हालाँकि, जब साहित्य सोशल मीडिया के उपयोग के माध्यम से जीए जा रहे इस नए संसार का चित्रण करता है, तो इसे समाज को शिक्षित करने के उद्देश्य से प्रतिमानों को तोड़ने का एक साधन माना जा सकता है। वर्तमान में, सोशल मीडिया लेखन को एक शैक्षणिक उपकरण के रूप में उपयोग करके संचार को बढ़ावा देने और सीखने में तेजी लाने का एक माध्यम बन गया है। सोशल नेटवर्क पर प्रकाशित जानकारी दुनिया भर के लाखों उपयोगकर्ताओं द्वारा देखी जाती है, लेकिन जब साहित्य



में इसका उपयोग किया जाता है, तो वह जानकारी गायब हो सकती है और जो बचती है वह स्मृति या पुस्तक होती है।

कार्यक्षेत्र और उद्देश्य: इस साहित्य समीक्षा का उद्देश्य साहित्यिक संस्कृति पर सोशल मीडिया के प्रभावों पर मौजूदा साहित्य का दस्तावेजीकरण करना है। सोशल मीडिया और साहित्य पर उपलब्ध साहित्य हमारे परिणामों की तुलना करने के लिए एक अच्छे मानक से कहीं अधिक प्रदान करता है—यह स्वाभाविक और सूचनात्मक परीक्षण मामले प्रस्तुत करता है। साहित्य की रुचि रखने वाले पाठक या शोधकर्ता को संभवतः विविध शब्दावली का सामना करना पड़ सकता है। कुछ लोग शब्दों को व्यवसाय या प्रकाशन के अध्ययन से जोड़ना चाहते हैं और इसलिए "गति", "पहुँच", "बाज़ार", और "लेखकों और पाठकों के बीच परस्पर क्रिया" जैसे व्यवसाय-प्रभावित शब्दों का उपयोग करते हैं, जबकि अन्य लेखकों और पाठकों के अंतर्निहित सामाजिक व्यवहार और विमर्श को समझना चाहते हैं, और ऐसे शब्दों का उपयोग करते हैं जो "समुदाय", "आत्म-अभिव्यक्ति", "सक्रिय संचार", "जुड़ाव", "सदस्यों की परस्पर क्रिया", और "भाग लेने वाले सक्रिय सदस्यों" से जुड़े हों। यह ओवरलैप, निश्चित रूप से, इन सभी सोच-विचारों को जोड़ता है और किसी दिलचस्प और संभवतः गहन बात की ओर इशारा करता है। हालाँकि, इन शोध-पत्रों के बीच मौजूदा स्थिति और अंतर गहरा है; यह तालिका आधुनिक संस्कृति के प्रति उत्साही लोगों; साहित्यिक रुचियों और स्वयं प्रतिभागियों; और साहित्यिक सेवा संगठनों, शैक्षणिक संस्थानों, और साहित्यिक प्रचार, संरक्षण और अध्ययन से जुड़े संस्थागत या शैक्षणिक पुस्तकालयों जैसे संस्थानों के लिए सोशल मीडिया के अर्थ और महत्व की सैद्धांतिक अंतर्दृष्टि या सहज व्याख्या प्रदान नहीं करती है।

2. साहित्य और सोशल मीडिया का ऐतिहासिक विकास

साहित्यिक कृतियों के निर्माण और उनकी दीर्घायु एवं प्रतिष्ठा सुनिश्चित करने का पारंपरिक तरीका उन्हें मुद्रित रूप में प्रकाशित करना था। इस दृष्टि से, साहित्य का सृजन, प्रसार और विस्तार भाषा के माध्यम से सार्वजनिक और राजनीतिक रूप में होता था, जो मुद्रण यंत्रों के माध्यम से जनता तक पहुँचता था। शहरीकृत परिवेश में पुस्तकों, साप्ताहिक समाचार पत्रों और विभिन्न विषयों पर प्रकाशनों का अस्तित्व शहरी निवासियों और ग्रामीण भूस्वामियों के बीच के अंतर को दर्शाता था। आज की दुनिया में, सोशल मीडिया लोगों के जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। वे स्थान जहाँ समान रुचियों वाले लोग इंटरनेट पर परस्पर क्रिया करते हैं, सोशल मीडिया कहलाते हैं। प्रत्येक प्रकार का सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं को सामग्री बनाने, उसका वर्णन करने और उसे साझा करने की अनुमति देता है। ऐसे मीडिया में, लोग अपनी जीवन शैली में समानताएँ विकसित करते हैं और विभिन्न प्रकार के तकनीकी उपकरणों का उपयोग करके, अधिकांशतः पाठ, ऑडियो, वीडियो या चित्र के रूप में लिखे गए संदेशों के साथ परस्पर क्रिया करते हैं। ये संदेश सोशल मीडिया साहित्यिक कृतियाँ होती हैं, जो उन्हें भेजने वाले लोगों की होती हैं। तदनुसार, तकनीकी अवसरों के अनुरूप, साहित्यिक सामग्री सहित, सामग्री के निर्माण और साझाकरण की दृष्टि से सोशल मीडिया का अत्यधिक महत्व है। उपयोगकर्ताओं के पास सोशल मीडिया के लिए अतिरिक्त मूल्य पोस्ट करने की सीमित सीमाएँ होती हैं। इस दृष्टिकोण से, यह निर्धारित करना महत्वपूर्ण है कि उपयोगकर्ता ने साहित्यिक कृति के रूप में निर्मित और साझा की गई कृति की वास्तविक पहचान का खुलासा किए बिना क्या योगदान दिया है। यदि आप आम जनता के लिए विशिष्ट और व्यापक सामग्री तैयार नहीं कर पाते हैं और एक अधिक लोकप्रिय प्रभाव को बाधित करते हैं, तो अन्य उपयोगकर्ता भ्रमित हो सकते हैं और आपकी पोस्ट, वीडियो या छवियों को छोड़ सकते हैं। सोशल मीडिया सारगर्भित सामग्री तैयार करने और व्यापक जनसमूह तक पहुँचने का एक संचार माध्यम है। सोशल मीडिया द्वारा सबसे अधिक प्रकाशित और प्रकाशित साहित्यिक कृतियाँ लाखों लोगों तक पहुँचीं और महत्वपूर्ण सामाजिक घटनाओं को आकार दिया। इस संबंध में, साहित्य के निर्माण और साझाकरण के संदर्भ में सोशल मीडिया का महत्व बढ़ गया है।



पारंपरिक साहित्य: साहित्यिक कृतियाँ पारंपरिक रूप से मुद्रित रूप में ही पढ़ी जाती हैं। हालाँकि, इंटरनेट और सोशल मीडिया ने आधुनिक युग में पुस्तकों और साहित्य के अन्य स्वरूपों के उपभोग के तरीके में एक डिजिटल बदलाव ला दिया है, जिससे साहित्य उपभोक्ताओं के लिए परस्पर संवाद और सहयोग के नए अवसर पैदा हुए हैं। लेकिन इस डिजिटल बदलाव का साहित्य पर क्या प्रभाव पड़ता है? यह शोधपत्र विभिन्न क्षेत्रों में विद्यमान साहित्य की एक आलोचनात्मक समीक्षा प्रस्तुत करता है ताकि सोशल मीडिया और साहित्य के बीच संबंधों पर केंद्रित शोध विषयों की पहचान की जा सके। ऐसा करके, हम साहित्य पर सोशल मीडिया के प्रभाव की एक अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं और संभावित शोध विषयों के रूप में कम खोजे गए विषयों का सुझाव देते हैं। साहित्य में काल्पनिक और गैर-काल्पनिक दोनों प्रकार की रचनाएँ शामिल हैं। कल्पना को कविता, नाटक, कथा और गैर-काल्पनिक सहित कल्पना की कृतियाँ समझ लिया जाता है। साहित्यिक कृतियों को कल्पना या गैर-काल्पनिक माना जा सकता है। लिखित कृतियों की व्यापक श्रेणी ने पूरे युग में सभ्यता में एक प्रमुख भूमिका निभाई है। साहित्य को समर्पित साहित्य का एक विशाल भंडार मौजूद है। शैली अध्ययन लोकप्रिय संस्कृति से सबसे अधिक निकटता से संबंधित कृतियों के समूह में विशेषज्ञता रखते हैं। औपचारिक ज्ञान निर्माण की एक धीमी प्रक्रिया के माध्यम से विधाएँ विकसित होती हैं, जहाँ साहित्यिक कृतियाँ समय की कसौटी पर खरी उतरती हैं और एक वर्गीकरण प्रणाली के अंतर्गत आती हैं। समय के साथ, इन कृतियों का पुनर्मूल्यांकन और पुनर्व्याख्या की जाती है, जिससे इस बात पर अंतहीन बहस छिड़ जाती है कि जब कोई विषय किसी मान्यता प्राप्त विधा या संबंधित विधा द्वारा प्रतिपादित सैद्धांतिक दिशानिर्देशों में फिट नहीं बैठता है, तो इसका क्या अर्थ है। वास्तव में, एक विधा साहित्यिक अनुभव को संरचित करने के लिए उपलब्ध अनेक तरीकों में से एक मात्र है।

सोशल मीडिया का उदय: विकास के विभिन्न चरणों से गुजरते हुए, वेब 2.0 का उदय हुआ, जिसने व्यवसायों, व्यक्तियों और संगठनों द्वारा वेब के उपयोग के आधार को बदल दिया और इसे सभी के लिए खोल दिया। इस परिवर्तन की विशेषता "केवल-पठन योग्य वेब से एक इंटरैक्टिव और कनेक्टेड रीड/राइट वेब की ओर क्रमिक बदलाव" है, जो उपयोगकर्ताओं को एक-दूसरे के साथ आसानी से बातचीत करने, सामग्री निर्माण में उपयोगकर्ता की भागीदारी और दूसरों द्वारा प्रदान की गई सामग्री का उपयोग करने के लिए तंत्र प्रदान करता है। ओरेली द्वारा मूल रूप से पहचाने गए, वेब 2.0 को कई सिद्धांतों के आधार पर बनाया गया था, जिनमें सहजता से काम लेना, जमीनी स्तर पर प्रयोग करने से न डरना, सीमांत विचारों को आम जनता पर हावी होना, और गति बनाए रखना और उपयोगकर्ताओं को बातचीत पर नियंत्रण देना शामिल है। यह अनुमान लगाया जाता है कि वेब 2.0 तकनीकों के तेज़ी से विकास ने उपयोगकर्ताओं को बेहतर ढंग से जुड़े रहने और अपनी गतिविधियों के बारे में अपडेट रहने की अनुमति दी, जिससे ये तकनीकें रोज़गार के लिए खतरा बन गईं। सोशल वेब के साथ परस्पर प्रयुक्त, सोशल मीडिया उन ऐप्स और वेबसाइटों को संदर्भित करता है जो निर्मित या क्यूरेट की गई सामग्री को साझा करने की अनुमति देते हैं। इस क्षमता का श्रेय इंटरनेट की शक्तिशाली पीढ़ी को दिया जा सकता है, जो आत्म-अभिव्यक्ति के लिए एक मूल्यवान मंच भी प्रदान कर सकता है। ये विशाल डिजिटल वातावरण हर उस व्यक्ति से आग्रह करते हैं जिसके पास कोई कहानी है, उसे सुनाएँ, अन्यथा वे अपनी आवाज़ खो देंगे। टैबलेट और स्मार्टफ़ोन जैसी मोबाइल तकनीकों के विकास के साथ, ट्विटर, इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप, यूट्यूब, फेसबुक और पॉडकास्ट जैसे एप्लिकेशन पूरे इंटरनेट पर छा गए हैं।

3. साहित्य पर सोशल मीडिया के प्रभाव के अध्ययन की पद्धतियाँ

साहित्य पर सोशल मीडिया के प्रभाव पर बढ़ते शोध में पद्धतिगत सीमाएँ विद्वानों के लिए गंभीर चिंता का विषय रही हैं। अधिक सावधानी और अधिक आलोचनात्मक एवं व्यापक पद्धतियों के बिना, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म और वेब 2.0 जैसे कारकों द्वारा साहित्य के उत्पादन, वितरण और उपभोग में लाए गए परिवर्तनों



पर किए गए कुछ शोध अपने सैद्धांतिकीकरण में सीमित हो सकते हैं और संभावित रूप से गलत निष्कर्षों की ओर ले जा सकते हैं। पोडू और गुओ ने इस बात की जाँच की कि फेसबुक, ट्विटर, माइस्पेस और अन्य जैसे विभिन्न रूपों में सोशल मीडिया घाना में जापानी एनीमेशन संस्कृति के प्रदर्शन पर कैसे बढ़ता प्रभाव प्रदर्शित करता है। इसके बजाय, वे अपने अंतःविषय विश्लेषण और अन्वेषण में नई और नवीन पद्धतियों के विकास के महत्व पर जोर देते हैं। अफ्रीकी साहित्य पर सोशल मीडिया के प्रभाव की समीक्षा करते हुए, इस विषय पर हाल के शोधकार्य अपने पद्धतिगत दृष्टिकोणों का बहुत कम आत्मनिरीक्षण करते हैं। इसके बजाय, कई रचनाएँ अपने पाठ्य साहित्यिक विश्लेषण के लिए मुख्यतः पारंपरिक पाठ्य पाठों और चयनित रचनाओं के इलेक्ट्रॉनिक संस्करणों के गुणात्मक विश्लेषण पर निर्भर करती हैं। ये पद्धतिगत दृष्टिकोण साहित्यिक उपयोग या विश्लेषणों का मूल्यवान अवलोकन हैं जिनसे अधिकाधिक व्यापक परिणाम प्राप्त होते हैं। हालांकि, गैर-पारंपरिक होने के बावजूद, गैर-पाठ-आधारित कारकों को शामिल करने के लिए सामाजिक मीडिया और साहित्य के विषयों पर चर्चा को आकार देने में, सामाजिक मीडिया सिद्धांत मौलिक रूप से महत्वपूर्ण साबित होते हैं।

गुणात्मक अनुसंधान विधियाँ: मात्रात्मक तकनीकों/मॉडलों की तरह, गुणात्मक दृष्टिकोण के चयन के लिए भी गहनता आवश्यक है, क्योंकि इसमें अक्सर समय लेने वाली और श्रमसाध्य प्रक्रिया और पर्याप्त संसाधनों का उपयोग शामिल होता है। क्रेसवेल की परिकल्पना के अनुसार, मिश्रित पद्धति अनुसंधान सामाजिक, व्यावहारिक और स्वास्थ्य विज्ञानों में प्रचलित एक शोध दृष्टिकोण है जिसमें अन्वेषक डेटा एकत्र करता है और उसका विश्लेषण करता है, निष्कर्षों को एकीकृत करता है, और गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों तकनीकों या विधियों का उपयोग करके निष्कर्ष निकालता है। ग्रीन और कैरासेली के अनुसार, जैसा कि क्रेसवेल में उद्धृत किया गया है, "मिश्रित" शब्द का प्रयोग यह नहीं दर्शाता है कि गुणात्मक और मात्रात्मक शोध दृष्टिकोणों का एक साथ उपयोग किया जाता है, बल्कि यह कि शोधकर्ता को शोध के उन चरणों को पूरा करना होगा जहाँ मिश्रण होता है।

मात्रात्मक अनुसंधान विधियाँ: मात्रात्मक शोध विधियाँ संख्यात्मक आँकड़ों या ऐसे आँकड़ों का उपयोग करती हैं जिन्हें परिमाणित किया जा सकता है ताकि सांख्यिकीय तकनीकों का उपयोग करके उनका विश्लेषण किया जा सके। इस प्रकार की शोध विधि में अपरिष्कृत आँकड़ों का संग्रह और फिर उन्हें सांख्यिकी के रूप में सारांशित करना शामिल है, जिनका उपयोग एकत्रित आँकड़ों का वर्णन करने में मदद के लिए किया जा सकता है। एकत्रित आँकड़ों का विश्लेषण आमतौर पर प्रश्नों के उत्तर प्रदान करने और कुछ मुद्दों के प्रभाव के स्तर या प्रभाव का निर्धारण करने के लिए किया जाता है। मात्रात्मक शोध विधियों का उपयोग तब भी किया जाता है जब शोध निष्कर्षों को विभिन्न परिस्थितियों में लागू करने के लिए सामान्यीकृत करने की आवश्यकता होती है। गैर-प्रयोगात्मक शोध विधियों को सहसंबंधी शोध विधियाँ भी कहा जाता है। इन्हें सहसंबंधी शोध इसलिए कहा जाता है क्योंकि इनका उपयोग दो चरों के बीच संबंधों की पहचान करने के लिए किया जाता है। ऐसे प्रयोग जिनमें ऐसे चरों का उपयोग किया जाता है जिन्हें बदला नहीं जा सकता, उन्हें गैर-प्रयोगात्मक मात्रात्मक शोध विधियाँ कहा जाता है। यह शोध विधि यादृच्छिक असाइनमेंट का उपयोग करती है ताकि समूहों के साथ समान व्यवहार किया जा सके और यह सुनिश्चित किया जा सके कि प्रतिस्पर्धी परिकल्पनाओं को अस्वीकार किया जा सके। एक प्रयोग माने जाने के लिए, शोध पद्धति में निम्नलिखित घटक होने चाहिए: (1) एक स्वतंत्र चर का हेरफेर, (2) एक तुलनात्मक समूह का उपयोग, (3) प्रतिभागियों का परिस्थितियों के अनुसार यादृच्छिक आवंटन, और (4) यह सुनिश्चित करना कि समूहों के बीच कोई अन्य चर व्यवस्थित रूप से भिन्न न हों। प्रायोगिक शोध पद्धतियाँ किसी भी प्रकार के पूर्वाग्रह को दूर करने में मदद करती हैं और शोधकर्ता का ध्यान आकर्षित करने में असमर्थ होती हैं। इस कारण, यह शोध के सबसे कम इस्तेमाल किए जाने वाले रूपों में से एक है।



4. प्रमुख निष्कर्ष और रुझान

इस लेख द्वारा प्रस्तावित सैद्धांतिक ढाँचों और परिकल्पनाओं, उनके द्वारा अपनाए गए शोध डिज़ाइनों, उनके द्वारा विश्लेषित परिणामों के प्रकारों, उनके द्वारा प्रस्तुत प्रमुख निष्कर्षों और भविष्य के कार्यों के लिए उनके द्वारा प्रस्तुत सुझावों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। वेब विज्ञान और डिजिटल मानविकी पर केंद्रित अपने शोध के साथ, लेखक पुस्तक बाजार की गतिशीलता में हाल के नाटकीय परिवर्तनों का अध्ययन करने के लिए कम्प्यूटेशनल दृष्टिकोण विकसित करते हैं। वे पारंपरिक खरीद सूचियों को एक ऐसी प्रणाली के रूप में संदर्भित करते हैं जो बिक्री विविधता (किस लेबल के तहत क्या बेचा जाता है) उत्पन्न करती है, और उनका तर्क है कि, स्थान-जागरूक मोबाइल उपकरणों के विकास के साथ, जो किसी भी समय ऑनलाइन पुस्तकों की खरीद को सक्षम बनाते हैं, एक नई प्रणाली उभरती है: "संलग्नता विविधता" - पुस्तकों का एक संग्रह जिस पर लोग चर्चा करते हैं। वे एक ऐसा दृष्टिकोण प्रस्तावित करते हैं जो लगभग 10 करोड़ भौगोलिक रूप से स्थित ट्विट्स के डेटासेट और लगभग 6,00,000 पुस्तक शीर्षकों की सूची के आधार पर, दुनिया भर में आकर्षक पुस्तकों की सूची बनाने में सक्षम बनाता है। वे दर्शाते हैं कि भौगोलिक अंतर उन पुस्तकों में परिलक्षित होते हैं जो बिक्री विविधता उत्पन्न करती हैं, लेकिन आकर्षक विविधता के प्रमुख विषय विभिन्न देशों में साझा हैं। वे बताते हैं कि, उदाहरण के लिए, असमानता और मानवाधिकारों पर चर्चाओं के बीच, पोशाक और शिष्टाचार की छवियों का प्रबंधन अब पदानुक्रम स्थापित करने या बहिष्कार की सीमाओं को सुदृढ़ करने के लिए प्रयुक्त आख्यान प्रदान नहीं करता है। वे शैलियों के बीच उल्लेखनीय अंतर पाते हैं, जो पढ़ने की प्राथमिकताओं में भिन्नता को दर्शाता है।

लेखन शैली में परिवर्तन: सोशल मीडिया ने साहित्य लेखन की शैली को काफी प्रभावित किया है। आजकल, सोशल मीडिया ने लेखकों को लेखन के विविध साधन उपलब्ध कराए हैं। पारंपरिक लिखित भाषा के अलावा, चिह्नित हाइपरलिंक, इंटरैक्टिव वीडियो और ऑडियो, चित्र और विज्ञापन टैग भी लेखन के साधन के रूप में उपयोगी हैं। विभिन्न लेखन साधनों ने लेखन के स्वरूप को भी बदल दिया है। केवल लिखित भाषा को लेखन के साधन के रूप में इस्तेमाल करने वाला लिखित स्वरूप, विविध लिखित और मल्टीमीडिया स्वरूपों को एकीकृत करने वाले लेखन स्वरूप में बदल गया है। कुछ गतिविधियाँ प्रदर्शन या घटना जैसी होती हैं। स्वरूप बदलने के अलावा, पारंपरिक साहित्यिक कृतियों के लेखन में कुछ व्युत्पत्तियाँ और अव्यवस्थाएँ भी आई हैं। व्युत्पन्न स्वरूप के रूप में, सूक्ष्म-कथा और व्यापक कथा, दोनों ही मंच द्वारा प्रभावित और नियंत्रित होते हैं। काल्पनिक तत्वों से भरपूर कथा के कथानक के मूल और प्रेरक तत्व, मंच के माध्यम से उपयोगकर्ताओं द्वारा प्राप्त जीवन के तथ्यों से उत्पन्न होते हैं। साथ ही, ऑनलाइन मंच ने लेखन में अव्यवस्था ला दी है। गद्य और कथा की लेखन शैली प्रायः समान, अतिव्यापी और अव्यवस्थित होती है। एक "बिग बैंग" के साथ, साहित्य जीवन से जुड़ने वाली एक क्रांतिकारी शैली से एक ऐसे क्रांतिकारी रूप में बदल जाएगा जो समय की शक्ति के साथ विकसित होगा। साहित्य के रूप और जीवनशैली के पारंपरिक परिवर्तन द्वारा लाए गए पारस्परिक प्रोत्साहन से अलग। मीडिया के "बिग बैंग" विकास के तहत जन्मा आधुनिक साहित्य जीवनशैली परिवर्तन की पूर्वापेक्षा का योद्धा और साक्षी बन जाता है। सोशल मीडिया एक नई अवधारणा है जिसे "चौथा मीडिया और तीसरा मीडिया" कहा जाता है। नेटवर्क की दुनिया में सोशल मीडिया चौथे मीडिया युग का नेतृत्व कर सकता है, नेटवर्क के बजाय, नेटवर्क को बाकी मीडिया को फ़िल्टर, दबाने और भ्रष्ट करने से रोकने के बजाय, यह सभी को मीडिया का निर्माता बनने देता है। सामग्री को समाहित करना, आउटपुट करना और पुनर्निर्देशित करना प्रत्येक मीडिया संदेश का एक अभिन्न अंग हो सकता है। जिस सोशल मीडिया ने चार मलय पात्रों को एकीकृत किया, वह अंततः तीन वास्तविक सोशल मीडिया को एकीकृत करेगा। सोशल मीडिया अभूतपूर्व स्व-सहायता और पारस्परिक सहायता के अवसर प्रदान करता है,



सभी द्वारा मीडिया को संपादित, प्रकाशित और वितरित करता है। व्यक्तियों और समूहों द्वारा धारण की गई मीडिया शक्ति काफ़ी मज़बूत हुई है। इसलिए, लेखन शैली परिवर्तन की क्षमता और सीमाएँ भी काफ़ी विस्तारित हुई हैं, और संभवतः अव्यवस्था और अव्यवस्था सामने आई है।

दर्शकों की सहभागिता: सोशल मीडिया केवल टेक्स्ट शेयर करने और दूसरों के साथ संवाद करने तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसे एक ऐसे माध्यम के रूप में देखा जा सकता है जहाँ लोग वास्तविक जीवन की तुलना में ज़्यादा आसानी से जुड़ सकते हैं और ऐसी समान रुचियाँ साझा कर सकते हैं जो हमारे करीबी लोगों में शायद न हों। उदाहरण के लिए, किशोरों और वयस्कों के ऑनलाइन समुदाय हैं जो विशिष्ट विधाओं या नवीनतम उपन्यासों को पढ़ने और उन पर चर्चा करने में रुचि रखते हैं। यही बात रोमांस पर आधारित पुस्तकों के लिए भी लागू होती है, जहाँ इस विधा में रुचि सामुदायिक गतिविधियों को जन्म देती है। हम यहाँ युवा वयस्कों के लिए पुस्तकें भी देखते हैं, और यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि यह श्रेणी उपयोगकर्ता-जनित सामग्री के प्लेटफ़ॉर्म पर तीसरे स्थान पर है और वयस्कों के बीच लोकप्रिय है। सोशल मीडिया में विशाल डेटा उपलब्ध है, जिसे अब डिजिटल समाजशास्त्र और माइक्रोमीडिया अध्ययन कहा जाता है। ये अध्ययन सोशल नेटवर्किंग प्लेटफ़ॉर्म पर दूसरों से जुड़े उपभोक्ता होने के परिणामों के बारे में लगातार नई अंतर्दृष्टि और शोध विधियाँ प्रदान करते हैं। सोशल मीडिया वेबसाइटों ने पोल, रेटिंग और चर्चा मंचों के माध्यम से सोशल रीडिंग की शुरुआत की है। वर्तमान में, इन वेबसाइटों पर उपभोक्ताओं के रूप में उपयोगकर्ताओं की भागीदारी दर उच्च है। हालाँकि, इस जुड़ाव का भविष्य में इस बात पर प्रभाव पड़ सकता है कि इस सहभागी वातावरण में रचित कृतियों की कल्पना कैसे की जाती है। उपयोगकर्ताओं को ट्विटर, माईस्पेस और फेसबुक जैसे स्वामित्व प्लेटफ़ॉर्मों के घटकों का पुनः उपयोग करने के लिए बज़ मार्केटिंग के माध्यम से प्रोत्साहित किया जाता है, जिससे न्यूनतम शारीरिक प्रयास से लेखकों को अधिक प्रचार मिल सकता है।

5. निहितार्थ और भविष्य की दिशाएँ

यह शोध पत्र कई मायनों में सोशल मीडिया और साहित्य अनुसंधान में योगदान देता है। सबसे पहले, यह मौजूदा शोध का एक व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत करता है और इस बात की जाँच करता है कि सोशल मीडिया साहित्य के विभिन्न पहलुओं को कैसे आकार दे रहा है। ऐसा करके, यह शोध पत्र साहित्य के स्थापित क्षेत्र में सोशल मीडिया की बढ़ती मध्यस्थता पर प्रकाश डालता है। दूसरा, यह भावी शोधकर्ताओं को उन मुख्य मुद्दों पर एक आवश्यक अद्यतन प्रदान करता है जिनकी जाँच की जा सकती है। तीसरा, यह इस क्षेत्र में कार्यरत लेखकों का ध्यान सोशल मीडिया द्वारा लाए गए परिवर्तनों पर चर्चा करने से पहले साहित्य की विशेषताओं पर अधिक ध्यान देने के लिए आकर्षित करता है। हमारे अध्ययन के निहितार्थ वेब ऑफ साइंस डेटाबेस के सामाजिक विज्ञान और कला एवं मानविकी श्रेणियों में सूचीबद्ध पत्रिकाओं में शामिल लेखों तक सीमित हैं, क्योंकि शोध ने इन विशिष्ट श्रेणियों में विस्तृत विवरण दिया है। इसके अलावा, भविष्य की शोध अवधारणाओं को बेहतर बनाने के लिए एक चर्चा के साथ-साथ एक भावी शोध दिशा भी प्रस्तुत की गई है।

शैक्षिक परिप्रेक्ष्य: साहित्य पर इंटरनेट के प्रभाव के बारे में शुरुआती विद्वानों की बातचीत, जैसी कि उम्मीद की जा सकती थी, बेहद आशावादी है। कुछ लोगों का मानना है कि जैसे-जैसे साक्षरता का एक नया रूप जन्म ले रहा है और हमारे बच्चे और युवा इसका इस्तेमाल कर रहे हैं, डिजिटल दुनिया में संचार हाइपरटेक्स्ट में पढ़ने और लिखने के अभ्यास का पूरक बनेगा। हालाँकि, यह प्रस्ताव कि साइबरस्पेस में अपने पहले कदम रख रहे युवाओं के साथ चलने के लिए डिज़ाइन की गई स्कूली शिक्षा को लागू करने का समाधान इंटरनेट है, अभी तक स्पष्ट रूप से समझा नहीं गया है। इनमें से ज़्यादातर ग्रंथ, पाठक को साइबर-समझ से परिचित कराकर, ऑनलाइन मोहिनी गीतों के मोहक आकर्षण से बचने के लिए,



आलोचनात्मक पठन गतिविधि को एक आवश्यक साधन के रूप में बढ़ावा देने के लिए इंटरनेट के उपयोग को ज़ोरदार प्राथमिकता देते हैं। नए मीडिया की क्षमता को देखते हुए, अब चुनौती साहित्य शिक्षण को बढ़ावा देने के लिए उनका उपयोग करने की है। वास्तविक कक्षा में लाए गए शैक्षिक लाभों के अलावा, नए मीडिया का उपयोग उन युवाओं को प्रेरित करने की संभावनाओं को बढ़ाने में योगदान देता है जो ऐसी श्रेणियों में पले-बढ़े हैं जहाँ शिक्षा, मनोरंजन और उपभोग के अनुचित मिश्रण का उपयोग सीखने और अच्छे ई-लर्निंग उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए किया जाना चाहिए। केवल पढ़ने की क्रिया, जो छपा है उसे ग्रहण करने की जगह अक्सर वास्तविकता या मैनुअल, पत्रिकाओं और उपन्यासों ने ले ली है जो खुद को केवल पूरक या विकल्प के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

रचनात्मक अवसर: लेखक, पहले के विपरीत, अब लिखकर छोड़ नहीं देते। लेखक पाठकों से संवाद करते हैं, प्रतिक्रियाएँ एकत्र करते हैं, और लेखक की छवि को जिस रूप में देखा जाता है, उसके प्रति एक अधिक संवादात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। जो लेखक अब प्रसिद्ध हो गए हैं, वे सोशल मीडिया पर अपनी गतिविधियों के आधार पर पाठकों से व्यक्तिगत स्तर पर संवाद करते हैं। दर्शकों को लेखक के काम पर सीधी प्रतिक्रिया देने का अवसर मिलता है - और कुछ मामलों में, वे क्राउडसोर्स संपादकों के रूप में काम करते हुए अपनी सामग्री भी जोड़ सकते हैं, जिससे लेखकों पर कहानियों को संशोधित और सही करने का विकासवादी दबाव बढ़ जाता है। वे ट्रोलिंग के ज़रिए हास्य का प्रयोग कर सकते हैं, सुझाव दे सकते हैं, या अपने काम के माध्यम से CHAAR कैमरे के बारे में टिप्पणी कर सकते हैं। ट्रांसमीडिया कथाएँ। चूँकि कहानियाँ तकनीक का उपयोग करके रची और पढ़ी जा रही हैं, इसलिए लेखकों के पास हर तरह के मीडिया और संचार माध्यमों में कथाओं को शामिल करने का रचनात्मक अवसर है। वह पात्रों के साथ शौक की योजना बनाने वाली किताबों और दर्शकों तक पहुँचने वाले टेलीविजन का ज़िक्र करते हैं, जहाँ इमोटिकॉन टेक्स्ट से भरे सोशल नेटवर्क का ज़िक्र होता है। वह कहते हैं कि अगर आप एक दिलचस्प कथा जगत बनाते हैं, तो आपके दर्शक उसे अभिव्यक्ति के अन्य रूपों में भी देखना चाहेंगे। आपको अपने प्रशंसकों पर भरोसा करना चाहिए कि वे सकारात्मक प्रतिक्रिया देंगे, तथा उन्हें यथासंभव गैर-साहित्यिक मीडिया क्षेत्रों में अपनी बात व्यक्त करने के लिए आमंत्रित करना चाहिए।

इस प्रकार, साहित्य सामूहिक स्मृति को संजोकर और समाज की वास्तविक इच्छाओं को मूर्त रूप देते हुए एक सामाजिक दस्तावेज़ बन जाता है। शोध इस जाँच का आधार है क्योंकि यह संवादों में चित्रित पात्रों द्वारा प्रयुक्त सामाजिक मीडिया की गतिशीलता को समझने और यह जानने का प्रयास करता है कि क्या उन्हें पाठकों द्वारा स्वीकार किया जाता है। यह अभी भी अज्ञात है कि क्या ये विचार वास्तव में साहित्यिक पात्रों के प्रतिबिंब हैं या पाठक द्वारा कोई दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक व्याख्या है, जो पुस्तक के बाहर समाज के रुझानों से जुड़ती है। डेटा संग्रह अतीत में आई समस्याओं और लोगों द्वारा उनके समाधान के तरीकों की पड़ताल करता है। यह व्यापक साहित्य समीक्षा मुख्य रूप से साहित्य के विकास में सामाजिक मीडिया के उपयोग के बारे में ज्ञान का अध्ययन और उसे व्यवस्थित करती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. कुमार.सु. (2004) इंटरनेट पत्रकारिता, नई दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन
2. India. New Delhi. Sage Publications
3. Journalism in India. New Delhi. Sage Publications.
4. सोनी, सु, (2009) नीवन मीडिया प्रविधियों, जयपुर बुक एनक्लेव,
5. Arya, N (2011) आधुनिक प्रभाव एवं कार्य जयपुर
6. Sharma. वि. (2011) Media Achivers, Jaipur Publication Harshloack Publication